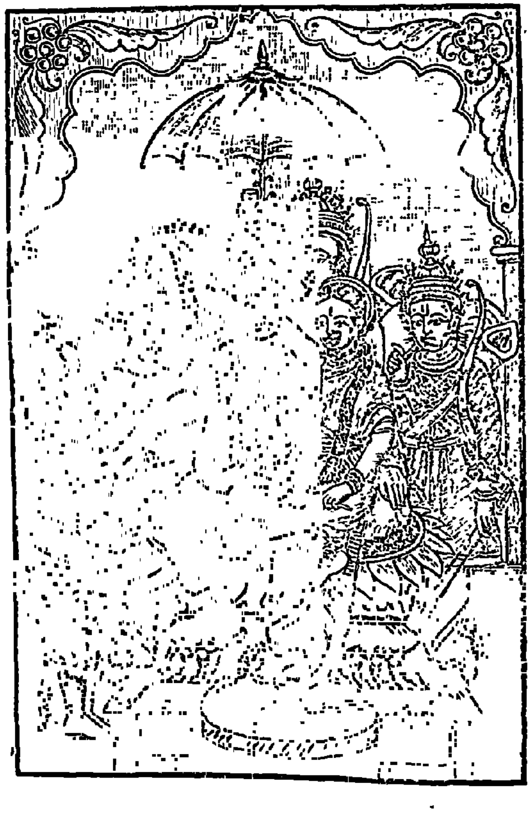
सन्त्यस्य पुनर्मुद्रणादयोऽधिकारा राजनियमानुसारेण प्रकाशयित्रा स्वायत्तीकृताः।

Printed by B. R. Ghaneker, at the Nirnaya-Sagar Press,
No. 23, Kolbhat Lane, Kalbadevi Road-Bombay.

Published by Pandit Vrajavallabha Hariprasad,
Ramwadi, Bombay.



श्रीः

रामस्तवराजः

भाषाटीकोपेतः ।

श्रीसीतारामचंद्राभ्यां नमः ।

ॐ अस्य श्रीरामचन्द्रस्तवराजस्तोत्रमन्त्रस्य सनत्कुमार ऋषिः ॥ अनुष्टुप् छन्दः ॥ श्रीरामो देवता ॥ सीता बीजम् ॥ हनूमान् शक्तिः ॥ श्रीरामप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ १ ॥

अर्थ-ॐ इस श्रीरामचंद्रजीके स्तवराजनाम स्तोत्रात्मक मंत्रका सनत्कुमार ऋषि है, अनुष्टप् ३२ अक्षरका छंद है, श्रीरामचंद्रजी देवता हैं, सीताजी वीज हैं, हनूमानूजी शक्ति हैं, श्रीरामचंद्रजी महाराजकी प्रीति होनेके वास्ते पाठ करनेमें इसका उपयोग कियाजाता है ॥ १ ॥

॥ सूत उवाच ॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञं व्यासं सत्यवतीसुतम् ॥
धर्मपुत्रः प्रहृष्टात्मा प्रत्युवाच मुनीश्वरम् ॥ २ ॥

अर्थ—शौनकादिक ऋषियोंको सूतजी कहते भए कि, समग्र शास्त्रोंके मुख्य अर्थोंको जाननेवाले, सत्यव्रतीके पुत्र, सब ऋषियोंमें श्रेष्ठ ऐसे महर्षि व्यासजीको आनंदयुक्त चित्तवाले राजा युधिष्ठिर प्रश्न करते भए ॥ २ ॥

॥ युधिष्ठिर उवाच ॥

भगवन् योगिनां श्रेष्ठ सर्वशास्त्रविशारद ॥
किं तत्त्वं किं परं जाप्यं किं ध्यानं मुक्तिसाधनम्३

अर्थ—राजा युधिष्ठिर पूछते भए कि, हे सर्व योगियोंमें श्रेष्ठ! हे सर्व शास्त्रोंमें निपुण! हे महाराज! व्यास मुनि! इस जगतमें तत्त्ववस्तु क्या है? और उत्तम जप करने योग्य स्तोत्र कौनसा है? और मुक्ति करानेवाला ध्यान कौनसा है? ॥ ३ ॥

श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं ब्रूहि मे मुनिसत्तम ॥

अर्थ-हे मुनियोंमें श्रेष्ठ ! वह सब मैं सुननेकी इच्छा करता हूं आप मुझको कहिये ॥

॥ वेदव्यास उवाच ॥

धर्मराज महाभाग शृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥४॥

अर्थ-वेदव्यासजी महाराज राजा युधिष्ठिरसे कहते हैं कि हे महाभाग्यशाली राजा युधिष्ठिर ! तुमने जो प्रश्न किया है, उसका उत्तर मैं यथार्थ रीतिसे कहताहूं, तुम श्रवण करो ॥ ४ ॥

यत्परं यद्गुणातीतं यज्ज्योतिरमलं शिवम् ॥
तदेव परमं तत्त्वं कैवल्यपदकारणम् ॥ ५ ॥

अर्थ-जो सबसे उत्तम है, जो प्रकृतिके गुणोंसे (सत्त्व-रज-तमो) से पर है, जो निर्मल ज्योतिःस्वरूप सर्वदा सर्वप्रकार मंगलकारी है, वही परमतत्त्व (राम) मोक्षका कारण है ॥ ५ ॥

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ॥
ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः ॥ ६ ॥

अर्थ–वह उत्कृष्ट ब्रह्मसंज्ञक संसारसमुद्रमेंसे पार उतारनेवाला और ब्रह्महत्या आदि पापोंका नाश करनेवाला, जप करने योग्य 'श्रीराम' यह मंत्र है, इस बातको वेदोंके जाननेवाले जानते हैं ॥ ६ ॥

श्रीराम रामेति जना ये जपन्ति च सर्वदा ॥
तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः॥७॥

अर्थ–जो लोग 'श्रीराम राम' ऐसा निरंतर जप करते हैं उनको इस लोकमें ऐश्वर्य और अंतमें मोक्ष (भगवच्चरणारविंदप्राप्ति) होता है इसमें संदेह नहीं ॥ ७ ॥

स्तवराजं पुरा प्रोक्तं नारदेन च धीमता ॥
तत्सर्वं संप्रवक्ष्यामि हरिध्यानपुरःसरम् ॥ ८ ॥

अर्थ–पूर्व समयमें बुद्धिमान् नारदजीने जो कहा है, और भगवान्का ध्यान है मुख्य जिसमें, ऐसे समग्र स्तवराजको मैं कहता हूं ॥ ८ ॥

तापत्रयाग्निशमनं सर्वाघौघनिकृन्तनम् ॥
दारिद्र्यदुःखशमनं सर्वसंपत्करं शिवम् ॥ ९ ॥

अर्थ–तीनों तापों (आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक) रूप अग्निको शान्त करनेवाले, सब पापोंके समूहको नाश करनेवाले, दरिद्र और दुःखको मिटानेवाले, सब संपत्तियोंको करनेवाले, कल्याण-स्वरूप, ॥ ९ ॥

विज्ञानफलदं दिव्यं मोक्षैकफलसाधनम् ॥
नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि रामं कृष्णं जगन्मयम्॥१०॥

अर्थ–विज्ञानरूप फलको देनेवाले, सर्वोत्तम सुंदर, ऐसे जगन्मय, श्यामस्वरूप, श्रीरामचंद्रको मैं नमस्कार करके मोक्षरूप मुख्य फलके साधन ऐसे रामस्तवराजको कहताहूं ॥ १० ॥

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमण्डपमध्यगे ॥
स्मरेत्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासनं शुभम् ॥ ११ ॥

अर्थ–प्रथम ध्यानप्रकार वर्णन करते हैं–मनोहर अयोध्या नगरमें रत्नोंके मंडपके वीच कल्पवृक्षके नीचे श्रेष्ठ रत्नोंके सिंहासन स्मरण करे ॥ ११ ॥

तन्मध्येऽष्टदलं पद्मं नानारत्नैश्च वेष्टितम् ॥
स्मरेन्मध्ये दाशरथिं सहस्रादित्यतेजसम् ॥१२॥

अर्थ–उस रत्नोंके सिंहासनके वीचमें नानाप्रकारके रत्नोंसे जड़ाहुआ अष्टदलकमलका स्मरण करे. उसमें हजारों सूर्य्यके समान तेजवाले श्रीरामचन्द्रजीका स्मरण करै १२

पितुरङ्कगतं राममिन्द्रनीलमणिप्रभम् ॥
कोमलाङ्गं विशालाक्षं विद्युद्वर्णाम्बरावृतम्॥१३॥

अर्थ–दशरथजीकी गोदीमें वैठे हुए हैं इंद्रनीलमणिके समान कांतिवाले हैं, कोमल जिनका शरीर है, विशाल जिनके नेत्र हैं, विजलीके समान प्रकाशवाले पीतवस्त्र धारण किये हैं ॥ १३ ॥

भानुकोटिप्रतीकाशं किरीटेन विराजितम् ॥
रत्नग्रैवेयकेयूरं रत्नकुण्डलमण्डितम् ॥ १४ ॥

अर्थ–करोड़ों सूर्योंकी कान्तिके समान कांतिवाले हैं, और किरीट (मुकुट) करके शोभित हैं, गलेमें रत्नोंके हार, हाथोंमें रत्नोंसे जड़ेहुए भुजबंद, कानोंमें रत्नोंके कुंडल पहिने हुए हैं ॥ १४ ॥

रत्नकङ्कणमञ्जीरकटिसूत्रैरलंकृतम् ॥
श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्ताहारोपशोभितम् १५

अर्थ–रत्नोंसे जड़ेहुए कड़े, नूपुर, कटिसूत्र, पहिने हुए हैं जिनके वक्षस्थलमें श्रीवत्सचिह्न और कौस्तुभ मणि शोभित होरहे हैं, और मोतियोंके हार पहिने हुए हैं तिससे शोभित हो रहे हैं ॥ १५ ॥

दिव्यरत्नसमायुक्तं मुद्रिकाभिरलंकृतम् ॥
राघवं द्विभुजं बालं राममीषत्स्मिताननम् ॥१६॥

अर्थ–दिव्य रत्नोंसे जड़ीहुई अँगूठियां पहिने हैं, दो भुजावाले हैं, बालस्वरूप हैं, और कुछ हास्ययुक्त है मुख जिसका ॥ १६ ॥

तुलसीकुन्दमन्दारपुष्पमाल्यैरलंकृतम् ॥
कर्पूरागुरुकस्तूरीदिव्यगन्धानुलेपनम् ॥ १७ ॥

अर्थ–तुलसी, मोगरा, मंदारके पुष्पोंकी मालाएँ पहिने हैं, कपूर अगरु कस्तूरी आदि मिलायाहुआ उत्तम चंदनका उबटन जिसने लगाया है ॥ १७ ॥

योगशास्त्रेष्वभिरतं योगीशं योगदायकम् ॥
सदा भरतसौमित्रिशत्रुघ्नैरुपशोभितम् ॥१८॥

अर्थ–योगशास्त्रमें निरत, योगियोंके स्वामी, योगको देनेवाले और सदैव भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न इन्हों-करके शोभित हैं ॥ १८ ॥

विद्याधरसुराधीशसिद्धगन्धर्वकिन्नरैः ॥
योगीन्द्रैर्नारदाद्यैश्च स्तूयमानमहर्निशम्॥१९॥

अर्थ–विद्याधर, देवताओंके मालिक इंद्रादिक, सिद्ध, गंधर्व, किन्नर और नारदादि योगीन्द्र जिनकी रातदिन स्तुति कर रहे हैं ॥ १९ ॥

विश्वामित्रवसिष्ठादिमुनिभिः परिसेवितम् ॥
सनकादिमुनिश्रेष्ठैर्योगिवृन्दैश्च सेवितम्॥२०॥

अर्थ–विश्वामित्र, वसिष्ठ आदि मुनि लोग और सनकादिक (सनक, सनंदन, सनातन, सनत्कुमार आदि) योगियोंके समूह जिनकी सेवा कर रहे हैं॥ २० ॥

रामं रघुवरं वीरं धनुर्वेदविशारदम् ॥
मङ्गलायतनं देवं रामं राजीवलोचनम्॥ २१ ॥

अर्थ–राम, रघुवंशमें श्रेष्ठ वीर, धनुर्वेदमें पारंगत, मंगलके स्थान, जगत्को प्रकाशित करनेवाले, कमलसरीखे नेत्रवाले रामका मैं चिंतवन करता हूं ॥ २१ ॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञमानन्दकरसुन्दरम् ॥
कौसल्यानन्दनं रामं धनुर्बाणधरं हरिम् ॥२२॥

अर्थ–सब शास्त्रोंके रहस्य अर्थको जाननेवाले, आनंदको करनेवाले, सुंदर, कौसल्याजीके पुत्र, धनुष बाण धारण करनेवाले, हरि, रामचंद्रजीका मैं चिंतवन करता हूं ॥ २२ ॥

एवं संचिन्तयन् विष्णुं यज्ज्योतिरमलं विभुम् ॥
प्रहृष्टमानसो भूत्वा मुनिवर्य्यः स नारदः ॥ २३ ॥

अर्थ–इसप्रकार निर्मल, ज्योतीरूप, व्यापक, विष्णुस्वरूप रामचंद्रजीका स्मरण करते हुए मुनिश्रेष्ठ नारदजी आनंदित चित्त होके ॥ २३ ॥

सर्वलोकहितार्थाय तुष्टाव रघुनन्दनम् ॥
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा चिन्तयन्नद्भुतं हरिम् ॥२४॥

अर्थ–सब लोकोंके हितार्थ, लोकोत्तर हरि रघुनंदनको चिंतवन करते हुए हाथ जोड़कर स्तुति करते भये ॥२४॥

यदेकं यत्परं नित्यं यदनन्तं चिदात्मकम् ॥
यदेकं व्यापकं लोके तद्रूपं चिन्तयाम्यहम् ॥२५॥

अर्थ–जो एक (अर्थात् उस जैसा कोईभी नहीं) जो प्रकृतिसे पर, भूतादि त्रिकालमें अविनाशी, अंतहिंत, चित्स्वरूप, जो लोकमें एकही व्यापक है वह रूप (ब्रह्म) मैं चिंतवन करताहूं ॥ २५ ॥

विज्ञानहेतुं विमलायताक्षं
प्रज्ञानरूपं स्वसुखैकहेतुम् ॥
श्रीरामचन्द्रं हरिमादिदेवं
परात्परं राममहं भजामि ॥ २६ ॥

अर्थ–विज्ञानके कारण, निर्मल और विस्तृत नेत्रवाले, प्रज्ञानरूप, आत्मसुखके मुख्य कारण, श्रीरामचंद्र, हरि, आदिदेव, पर जो ब्रह्मादिक उनसेभी पर ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ २६ ॥

कविं पुराणं पुरुषं पुरस्तात्
सनातनं योगिनमीशितारम् ॥
अणोरणीयांसमनन्तवीर्यं
प्राणेश्वरं राममसौ ददर्श ॥ २७ ॥

अर्थ–कवि, पुराण, पुरुष, पूर्वज, सनातन, योगी, जगत्के स्वामी, सूक्ष्मसे सूक्ष्म, अनंत पराक्रमवाले, प्राणोंके

नियामक श्रीरामचंद्रजीका अपने सामने नारदजी दर्शन करते हुए ॥ २७ ॥

नारद उवाच ।

नारायणं जगन्नाथमभिरामं जगत्पतिम् ॥
कविं पुराणं वागीशं रामं दशरथात्मजम्॥२८॥

अर्थ–नारदजी बोले, क्षीरसमुद्रमें वास करनेवाले जगत्के स्वामी, मनोहरस्वरूप, जगत्के पति, कवि, पुराण, वाणीके मालिक, दशरथजीके पुत्र, श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २८ ॥

राजराजं रघुवरं कौसल्यानन्दवर्धनम् ॥
भर्गं वरेण्यं विश्वेशं रघुनाथं जगद्गुरुम् ॥२९॥

अर्थ–राजाओंके राजा, रघुवर, कौसल्याजीको आनंद बढ़ानेवाले, भर्ग (ज्योतिःस्वरूप), वरेण्य (सर्वोत्तम अर्थात् उन जैसा कोई नहीं), विश्वके ईश; रघुकुलके नाथ, जगत्के गुरु श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २९ ॥

सत्यं सत्यप्रियं श्रेष्ठं जानकीवल्लभं विभुम् ॥
सौमित्रिपूर्वजं शान्तं कामदं कमलेक्षणम् ॥३०॥

अर्थ—सत्यस्वरूप, सत्य है प्रिय जिनको ऐसे, श्रेष्ठ, जानकीजीके पति, व्यापक, लक्ष्मणजीके बड़े भाई, शान्त, वांछित वस्तुको देनेवाले, कमलसमान नेत्रवाले श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३० ॥

आदित्यं रविमीशानं घृणिं सूर्यमनामयम् ॥
आनन्दरूपिणं सौम्यं राघवं करुणामयम् ॥३१॥

अर्थ—आदित्य, रवि, ईशान, घृणि, सूर्य, रोगरहित, आनंदस्वरूप, सौम्य, करुणामय, ऐसे रामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३१ ॥

जामदग्न्यं तपोमूर्तिं रामं परशुधारिणम् ॥
वाक्पतिं वरदं वाच्यं श्रीपतिं पक्षिवाहनम् ॥३२॥

अर्थ—जामदग्न्य, तपकी मूर्ति, परशुको धारण करनेवाले राम, वाणीके पति, वरोंके देनेवाले, गुणानुवाद

करनेयोग्य, लक्ष्मीके पति, पक्षिराज गरुडपर सवार होनेवाले (श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं) ॥ ३२ ॥

श्रीशार्ङ्गधारिणं रामं चिन्मयानन्दविग्रहम् ॥
हलधृग्विष्णुमीशानं बलरामं कृपानिधिम् ॥ ३३ ॥

अर्थ—शार्ङ्गधनुष धारण करनेवाले, राम, चिन्मय व आनंदमय है शरीर जिन्होंका, हलको धारण करनेवाले, विष्णु, ईशान, वलराम, कृपाके सागर श्रीरामचंद्रजीको नित्य मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३३ ॥

श्रीवल्लभं कृपानाथं जगन्मोहनमच्युतम् ॥
मत्स्यकूर्मवराहादिरूपधारिणमव्ययम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—लक्ष्मीजीके पति, कृपाके नाथ, जगत्को मोहित करनेवाले, अच्युत, अविनाशी, मत्स्य, कच्छप, वराह आदि रूप धारण करनेवाले, अव्यय, श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३४ ॥

वासुदेवं जगद्योनिमनादिनिधनं हरिम् ॥
गोविन्दं गोपतिं विष्णुं गोपीजनमनोहरम् ॥ ३५

अर्थ-वासुदेव, जगत्के रचयिता, आदि अंत और नाश करके रहित, हरि (पापोंको हरनेवाले), गोविंद (वाणियोंके स्वामी), गौओंके पालन करनेवाले, गोपीजनोंके मनको हरण करनेवाले ऐसे व्यापक श्रीरामचंद्रजीको मैं नित्य नमस्कार करता हूं ॥ ३५ ॥

गोगोपालपरीवारं गोपकन्यासमावृतम् ॥
विद्युत्पुञ्जप्रतीकाशं रामं कृष्णं जगन्मयम्॥३६॥

अर्थ-गायें और गोपाल जिनके परिवार हैं, गोपोंकी कन्याएँ जिनके समीप खड़ी हैं, बिजलियोंके समूहों जैसी जिनकी कांति है, ऐसे जगन्मय कृष्णरूपी श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३६ ॥

गोगोपिकासमाकीर्णं वेणुवादनतत्परम् ॥
कामरूपं कलावन्तं कामिनीकामदं विभुम्॥३७॥

अर्थ-गायें और गोपिकाओंसे घिरेहुये, बाँसुरी बजानेमें तत्पर, कामदेवस्वरूप, कलावाले, कामिनीयोंको

यथेच्छ फल देनेवाले, व्यापक, श्रीकृष्णरूपी रामचंद्र-जीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३७ ॥

मन्मथं मथुरानाथं माधवं मकरध्वजम् ॥
श्रीधरं श्रीकरं श्रीशं श्रीनिवासं परात्परम् ॥३८॥

अर्थ—कामदेव, मथुराके नाथ, लक्ष्मीके पति, मद-नरूप लक्ष्मीजीको धारण करनेवाले, ऐश्वर्यके करनेवाले, लक्ष्मीजीके मालिक, लक्ष्मीजीके निवासस्थान, ब्रह्मा-दिकोंसे भी पर ऐसे कृष्णरूपी श्रीरामचंद्रजीको मैं नम-स्कार करताहूं ॥ ३८ ॥

भूतेशं भूपतिं भद्रं विभूतिं भूतिभूषणम् ॥
सर्वदुःखहरं वीरं दुष्टदानववैरिणम् ॥ ३९ ॥

अर्थ—समस्त प्राणियोंके मालिक, पृथ्वीके पति, कल्याणरूप, ऐश्वर्यस्वरूप ऐश्वर्यके भूषण, सर्वदुःखोंके हर्ता, वीर, दुष्टदानवोंके वैरी ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ३९ ॥

श्रीनृसिंहं महाबाहुं महान्तं दीप्ततेजसम् ॥
चिदानन्दमयं नित्यं प्रणवज्योतिरूपिणम् ॥४०॥

अर्थ–श्रीनृसिंहस्वरूप, बड़ी भुजाओंवाले, महान्, देदीप्यमान तेजवाले, चिदानंदरूप, नित्य (सर्वदा सर्वत्र विद्यमान), प्रणव (ॐकार), ज्योतिःस्वरूप, श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४० ॥

आदित्यमण्डलगतं निश्चितार्थस्वरूपिणम् ॥
भक्तप्रियं पद्मनेत्रं भक्तानामीप्सितप्रदम् ॥ ४१ ॥

अर्थ–सूर्यमंडलमें रहनेवाले, निश्चितअर्थस्वरूप (ज्ञानियोंके निश्चय कियेहुए धन, वेदोंके सारांश भगवानही हैं), भक्तोंके प्रिय, कमलसरीखे नेत्रोंवाले, भक्तोंके वांछित फलको देनेवाले, श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४१ ॥

कौसल्येयं कलामूर्तिं काकुत्स्थं कमलाप्रियम् ॥
सिंहासने समासीनं नित्यव्रतमकल्मषम् ॥ ४२ ॥

अर्थ–कौसल्याजीके पुत्र, कला (अंश)सेभी अवतार लेनेवाले, काकुत्स्थ, लक्ष्मीके प्रिय, सिंहासनपर बैठेहुए, नित्यव्रत करनेवाले (शास्त्रोक्त नित्य मर्यादा रखनेवाले), अकल्मष (पातकोंसे रहित) ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४२ ॥

विश्वामित्रप्रियं दान्तं स्वदारनियतव्रतम् ॥
यज्ञेशं यज्ञपुरुषं यज्ञपालनतत्परम् ॥ ४३ ॥

अर्थ–विश्वामित्रजीकें प्यारे, इंद्रियोंका दमन करनेवाले, अपनी पत्नीमेंही रतिका नियम रखनेवाले, यज्ञोंके पति, यज्ञपुरुष, यज्ञकी रक्षा करनेमें तत्पर ऐसे श्रीरामचन्द्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४३ ॥

सत्यसंधं जितक्रोधं शरणागतवत्सलम् ॥
सर्वक्लेशापहरणं विभीषणवरप्रदम् ॥ ४४ ॥

अर्थ–सत्यप्रतिज्ञावाले, क्रोधके जीतनेवाले, शरण आये हुए पर कृपा करनेवाले, सब क्लेशोंको दूर करनेवाले, विभीषणको वर देनेवाले, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४४ ॥

दशग्रीवहरं रौद्रं केशवं केशिमर्दनम् ॥
वालिप्रमथनं वीरं सुग्रीवेप्सितराज्यदम् ॥४५॥

अर्थ–रावणके प्राणोंको हरनेवाले, उग्ररूप धारनेवाले, केशव, केशी दैत्यका मर्दन करनेवाले, वालिको मारनेवाले, सुग्रीवको वांछित (राज्यादि) देनेवाले ऐसे वीर श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४५ ॥

नरवानरदेवैश्च सेवितं हनुमत्प्रियम् ॥
शुद्धं सूक्ष्मं परं शांतं तारकं ब्रह्मरूपिणम्॥४६॥

अर्थ–मनुष्य, वानर और देवता जिनकी सेवा कर रहे हैं, हनुमानजीके प्यारे, शुद्ध, सूक्ष्म, मायासे पर, शान्त, तारक, ब्रह्मरूपी श्रीरामचंद्रजी महाराजको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४६ ॥

सर्वभूतात्मभूतस्थं सर्वाधारं सनातनम् ॥
सर्वकारणकर्त्तारं निदानं प्रकृतेःपरम् ॥ ४७ ॥

अर्थ–सब प्राणियोंके मनमें रहनेवाले, सब (ब्रह्माजीको आदि लेके त्रिलोकी) के आधार, सनातन, समग्र

कारणसमूहोंके करनेवाले, सबके मुख्य कारण, प्रकृतिसे पर ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४७ ॥

निरामयं निराभासं निरवद्यं निरञ्जनम् ॥
नित्यानन्दं निराकारमद्वैतं तमसः परम् ॥४८॥

अर्थ–रोगोंसे रहित, आभास (मिथ्या प्रतीति) से रहित, पापोंसे रहित, जिसका कोई प्रकाशक नहीं, नित्य आनंदस्वरूप, आकाररहित, अद्वैत, तमोगुणसे पर ऐसे श्रीरामचंद्रजी महाराजकों मैं नमस्कार करताहूं ॥ ४८ ॥

परात्परतरं तत्वं सत्यानन्दं चिदात्मकम् ॥
मनसा शिरसा नित्यं प्रणमामि रघूत्तमम् ॥४९॥

अर्थ–ब्रह्मादिकोंसे पर, तत्त्वस्वरूप, सत्य, आनंद और चैतन्यस्वरूप ऐसे रघूत्तम श्रीरामचंद्रजीको मैं मनसे और शिरसे नमस्कार करताहूं ॥ ४९ ॥

सूर्यमण्डलमध्यस्थं रामं सीतासमन्वितम् ॥
नमामि पुण्डरीकाक्षममेयं गुरुतत्परम ॥ ५० ॥

अर्थ–सूर्यमंडलके मध्यस्थित, कमलसमान नेत्रवाले, अमेय (जिनके समान कोई नहीं), गुरुजनों (वसिष्ठ-विश्वामित्रादिकों)की सेवामें तत्पर, सीताजीसहित श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ५० ॥

नमोऽस्तु वासुदेवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥
नमोऽस्तु रामदेवाय जगदानन्दरूपिणे॥ ५१ ॥

अर्थ–वासुदेव भगवानके लिये मेरा नमस्कार हो, प्रकाशक सूर्य, चंद्र, अग्नि, विद्युत्, नक्षत्र आदिकोंके पतिके अर्थ मेरा नमस्कार हो, जगत्के आनंदरूप, देव श्रीरामचंद्रजीके लिये मेरा नमस्कार हो ॥ ५१ ॥

नमो वेदान्तनिष्ठाय योगिने ब्रह्मवादिने ॥
मायामयनिरस्ताय प्रपन्नजनसेविने ॥ ५२ ॥

अर्थ–वेदान्तमें निष्ठा (प्रीति) रखनेवाले, योगी, ब्रह्मवादी, मायाके दोषोंको दूर करनेवाले, शरणागत मनुष्योंकी रक्षा करनेवाले ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मेरा नमस्कार हो ॥ ५२ ॥

वन्दामहे महेशानचण्डकोदण्डखण्डनम् ॥
जानकीहृदयानन्दचन्दनं रघुनन्दनम् ॥ ५३ ॥

अर्थ-शंकरके अति प्रचंड धनुषको तोडनेवाले, जानकीजीके हृदयको आनंदित करनेवाले चंदनरूप ऐसे रघुनंदन श्रीरामचंद्रजीको हम नमस्कार करते हैं॥ ५३ ॥

उत्फुल्लामलकोमलोत्पलदलश्यामाय रामाय ते
कामाय प्रमदामनोहरगुणग्रामाय रामात्मने ॥
योगारूढमुनीन्द्रमानससरोहंसाय संसारविध्वं-
साय स्फुरदोजसे रघुकुलोत्तंसाय पुंसे नमः ॥५४॥

अर्थ-विकसित स्वच्छ कोमल कमलके दलकी समान श्यामस्वरूप, श्रीराम, कामदेव जैसे सुंदर, स्त्रियोंके मनको हरण करनेवाले गुणोंके समूह हैं जिनके, रमणीय है आत्मा जिनका, योगमें तत्पर जो मुनीश्वर उनके मनोरूपी सरोवरमें हंसरूपसे निवास करनेवाले, जन्ममरणको मिटानेवाले, पराक्रमसे युक्त, रघुकुलके भूषण, आदिपुरुष ऐसे श्रीरामचंद्रजीके अर्थ मेरा नमस्कार है ॥ ५४ ॥

भवोद्भवं वेदविदां वरिष्ठ-
मादित्यचन्द्रानलसुप्रभावम् ॥
सर्वात्मकं सर्वगतस्वरूपं
नमामि रामं तमसः परस्तात् ॥ ५५ ॥

अर्थ-संसारके उत्पन्नकर्ता, वेद जाननेवालोंमें श्रेष्ठ, सूर्य चंद्र अग्निके समान प्रभाववाले, सव जगत् जिन्होंका शरीर है, सबमें व्याप्त है स्वरूप जिनका, अज्ञानसे पर स्वरूपवाले, श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥५५॥

निरञ्जनं निष्प्रतिमं निरीहं
निराश्रयं निष्कलमप्रपञ्चम् ॥
नित्यं ध्रुवं निर्विषयस्वरूपं
निरन्तरं राममहं भजामि ॥ ५६ ॥

अर्थ-स्वयंप्रकाश, जिनके समान कोई नहीं, निरपेक्ष, आश्रयरहित, जो किसीकी कला नहीं अर्थात् स्वयंव्यक्त नारायणस्वरूप, प्रपंचरहित, कालत्रयाबाधित, अविनाशी,

विषयरहित स्वरूपवाले, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं निरंतर भजताहूं ॥ ५६ ॥

भवाब्धिपोतं भरताग्रजं तं
भक्तप्रियं भानुकुलप्रदीपम् ॥
भूतत्रिनाथं भुवनाधिपत्यं
भजामि रामं भवरोगवैद्यम् ॥ ५७ ॥

अर्थ–संसारसागरको तैरनेके लिये नौकारूप भरतजीके बड़ेभाई, भक्तोंके प्रिय अथवा भक्त हैं प्रिय जिनको, सूर्यकुलके दीपक, प्राणियोंकी उत्पत्ति–स्थिति–नाशके मालिक, चौदह भुवनोंके स्वामी, संसाररूप रोगके वैद्य, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ५७ ॥

सर्वाधिपत्यं समरे गभीरं
सत्यं चिदानन्दमयस्वरूपम् ॥
सत्यं शिवं शान्तिमयं शरण्यं
सनातनं राममहं भजामि ॥ ५८ ॥

अर्थ—सबका स्वामित्व है जिनको, युद्धमें गंभीर, सत्य, चित्स्वरूप, आनंदमय स्वरूप, सच्चे मंगलस्वरूप (अर्थात् ईश्वरके सिवाय और वस्तुओंमें तो मंगलताका भान मात्र है, सच्चा मंगलस्वरूप तो ईश्वरका ही है), शान्तिरूप, शरणागतवत्सल, सनातन ऐसे श्रीरामचंद्र-जीको मैं भजताहूं ॥ ५८ ॥

कार्यक्रियाकारणमप्रमेयं
कविं पुराणं कमलायताक्षम् ॥
कुमारवैद्यं करुणामयं तं
कल्पद्रुमं राममहं भजामि ॥ ५९ ॥

अर्थ—कार्य क्रिया कारणरूप, जिनकी समान कोई नहीं, वेदोंके वक्ता, पुरातनपुरुष, कमलकी समान विस्तीर्ण नेत्रोंवाले, कुत्सितकामरूपी रोगको मिटानेवाले, दयावान्, कल्पवृक्षकी समान इच्छित वस्तुको देनेवाले, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ५९ ॥

त्रैलोक्यनाथं सरसीरुहाक्षं
दयानिधिं द्वन्द्वविनाशहेतुम् ॥
महाबलं वेदनिधिं सुरेशं
सनातनं राममहं भजामि ॥ ६० ॥

अर्थ–त्रिलोकीके स्वामी, कमलसमान नेत्रवाले, दयाके समुद्र, सुखदुःखादिकोंके नाशके कारण, महापराक्रमी, वेदोंके भंडार, देवताओंके मालिक, सनातन, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ६० ॥

वेदान्तवेद्यं कविमीशितार-
मनादिमध्यान्तमचिन्त्यमाद्यम् ॥
अगोचरं निर्मलमेकरूपं
नमामि रामं तमसः परस्तात् ॥ ६१ ॥

अर्थ–वेदांत शास्त्रसे जाननेयोग्य, कवि (वेदोंके वक्ता), त्रिलोकीके मालिक, आदि–मध्य–अंतकरके रहित, जिन्होंका चिंतवन नहीं होसक्ता ऐसे, आदिपुरुष, देखनेमें

नहीं आवे ऐसे, स्वच्छ सदा एकरूप, अज्ञानसे पर, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ६१ ॥

अशेषवेदात्मकमादिसंज्ञ-
मजं हरिं विष्णुमनन्तमाद्यम् ॥
अपारसंवित्सुखमेकरूपं
परात्परं राममहं भजामि ॥ ६२ ॥

अर्थ—संपूर्ण वेदरूप, आदिपुरुष, अजन्मा, पापोंको दूर करनेवाले, व्यापक, अनंत, आदिदेव, अपार ज्ञानके सुख, एक, ब्रह्मादिकोंसे पर, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ६२ ॥

तत्त्वस्वरूपं पुरुषं पुराणं
स्वतेजसा पूरितविश्वमेकम् ॥
राजाधिराजं रविमण्डलस्थं
विश्वेश्वरं राममहं भजामि ॥ ६३ ॥

अर्थ—तत्त्वस्वरूप, पुराण पुरुष, अपने तेजसे सब विश्वको पूरित करनेवाले, अद्वितीय, राजाओंके राजा, सूर्य-

मंडलमें रहनेवाले, विश्वके ईश्वर, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ६३ ॥

लोकाभिरामं रघुवंशनाथं
हरिं चिदानन्दमयं मुकुन्दम् ॥
अशेषविद्याधिपतिं कवीन्द्रं
नमामि रामं तमसः परस्तात् ॥ ६४ ॥

अर्थ–लोकोंमें मनोहर (अर्थात् उनजैसा सुन्दर कोई भी नहीं) रघुकुलमें श्रेष्ठ, पापोंके हरनेवाले, चैतन्य आनंदरूप, भोगमोक्षके देनेवाले, सब विद्याओंके मालिक, कवियोंके इंद्र, अज्ञानसे पर, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ६४ ॥

योगीन्द्रसंघैश्च सुसेव्यमानं
नारायणं निर्मलमादिदेवम् ॥
नतोऽस्मि नित्यं जगदेकनाथ-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ६५ ॥

अर्थ-योगिराजोंके समूहोंकरके सेवित, नारायण, निर्मल, आदिदेव, जगत्के एकनाथ, नित्य, सूर्यके समान वर्णवाले, अज्ञानसे पर, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ६५ ॥

विभूतिदं विश्वसृजं विराजं
राजेन्द्रमीशं रघुवंशनाथम् ॥
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमूर्तिं
ज्योतिर्मयं राममहं भजामि ॥ ६६ ॥

अर्थ-ऐश्वर्यके देनेवाले, विश्वको उत्पन्न करनेवाले, विराट्पुरुष, राजाओंके राजा, सबके स्वामी, रघुकुलके नाथ, जिनका चिंतवन नहीं किया जासक्ता, अव्यक्त (अप्रकट), अनंतमूर्ति, ज्योति, ऐसे श्रीरामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ६६ ॥

अशेषसंसारविकारहीन-
मादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम् ॥

समस्तसाक्षिं तमसः परस्ता-
न्नारायणं विष्णुमहं भजामि ॥ ६७ ॥

अर्थ—समग्र संसारके विकारोंसे रहित, सूर्यमंडलमें रहनेवाले, पूर्ण आनंदसे मनोहर, सबके साक्षी, अज्ञानसे पर ऐसे श्रीनारायण विष्णुस्वरूप रामचंद्रजीको मैं भजताहूं ॥ ६७ ॥

मुनीन्द्रगुह्यं परिपूर्णकामं
कलानिधिं कल्मषनाशहेतुम् ॥
परात्परं यत्परमं पवित्रं
नमामि रामं महतो महान्तम् ॥ ६८ ॥

अर्थ—मुनीन्द्रोंसे भी गुह्य (अर्थात् भगवानका यथार्थ स्वरूप मुनिलोगोंको भी मुश्किलसे समझमें आता है), सर्वप्रकार परिपूर्ण है मनोरथ जिनके, कलाओंके खजाने, पापोंका नाश करनेवाले, ब्रह्मादिकोंसे पर, परमपवित्र, ऐसे बड़ोंसे बड़े श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ६८ ॥

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च देवेन्द्रो देवतास्तथा ॥
आदित्यादिग्रहाश्चैव त्वमेव रघुनन्दन ॥ ६९ ॥

अर्थ–हे रघुनंदन ! ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, देवता और सूर्यादि ग्रह तुमही हो (अर्थात् वह तुम्हारी ही विभूति है) ॥ ६९ ॥

तापसा ऋषयः सिद्धाः साध्याश्च मरुतस्तथा ॥
विप्रा वेदास्तथा यज्ञाः पुराणं धर्मसंहिताः ॥७०॥

अर्थ–तपस्वी, ऋषि, सिद्ध, साध्य, मरुत् (एकोनपंचाश वायु), (ब्राह्मण, वेद, यज्ञ, पुराण, धर्मसंहिता (स्मृति) यह समग्र आपकीही विभूति हैं ॥ ७० ॥

वर्णाश्रमास्तथा धर्मा वर्णधर्मास्तथैव च ॥
यक्षराक्षसगन्धर्वा दिक्पाला दिग्गजादिभिः ७१

अर्थ–वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), आश्रम (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास), सामान्य धर्म, चारों वर्णोंके धर्म, यक्ष, राक्षस, गंधर्व, दशदिशाओंके हाथियोंकरके सहित दिग्पाल आपही हो ॥ ७१ ॥

सनकादिमुनिश्रेष्ठास्त्वमेव रघुपुङ्गव ॥
वसवोऽष्टौ त्रयः काला रुद्रा एकादश स्मृताः ७२

अर्थ—हे रघुश्रेष्ठ ! सनकादिक चार मुनिश्रेष्ठ, आठ वसु, भूत, वर्तमान और भविष्य ऐसे तीन काल, ग्यारह रुद्र ये सब आपही हों ॥ ७२ ॥

तारका दश चैवाशास्त्वमेव रघुनन्दन ॥
सप्त द्वीपाः समुद्राश्च नगा नद्यस्तथा द्रुमाः ॥७३॥

अर्थ—हे रघुनंदन ! तारे, दशों दिशा, सातों द्वीप, सात समुद्र, और पर्वत, नदी, वृक्ष आपही हों ॥ ७३ ॥

स्थावरा जङ्गमाश्चैव त्वमेव रघुनायक ॥
देवतिर्यङ्मनुष्याणां दानवानां तथैव च ॥७४॥

अर्थ—हे रघुनायक ! स्थावर (एक जगह स्थिर रहनेवाले), जंगम (चलने फिरनेवाले), पदार्थ आपही हों और देवता, पशु, पक्षी, मनुष्य, दानवोंके—॥ ७४ ॥

माता पिता तथा भ्राता त्वमेव रघुवल्लभ ॥
सर्वेषां त्वं परं ब्रह्म त्वन्मयं सर्वमेव हि ॥७५॥

अर्थ–माता, पिता, भ्राता हे रघुवल्लभ ! तुमही हो, सर्वोंमें परब्रह्म आपही हो, यह सब विभूति आपकीही हैं ॥७५॥

त्वमक्षरं परं ज्योतिस्त्वमेव पुरुषोत्तम ॥
त्वमेव तारकं ब्रह्म त्वत्तोन्यन्नैव किंचन ॥७६॥

अर्थ–हे पुरुषोत्तम ! आप नाशरहित हो, आपही सर्वोत्तम ज्योति हो, आपही तारक (मुक्ति करनेवाले) ब्रह्म हो, आपके सिवाय दूसरा कोईभी नहीं है ॥ ७६ ॥

शान्तं सर्वगतं सूक्ष्मं परं ब्रह्म सनातनम् ॥
राजीवलोचनं रामं प्रणमामि जगत्पतिम् ॥७७॥

अर्थ–शान्त, सबमें व्याप्त, सूक्ष्म, पर ब्रह्म, सनातन, ऐसे जगत्के पति कमलसरीखे नेत्रवाले, श्रीरामचंद्रजीको मैं नमस्कार करताहूं ॥ ७७ ॥

व्यास उवाच ।

ततः प्रसन्नः श्रीरामः प्रोवाच मुनिपुङ्गवम् ॥
तुष्टोऽस्मि मुनिशार्दूल वृणीष्व वरमुत्तमम् ॥७८॥

अर्थ–व्यासजी बोले कि फिर प्रसन्न हुए श्रीरामचंद्रजी महाराज मुनिश्रेष्ठ नारदजीको कहतेहुए कि हे मुनिश्रेष्ठ ! मैं प्रसन्न हुआ हूं तुम उत्तम वर माँगो ॥ ७८ ॥

नारद उवाच ।

यदि तुष्टोऽसि सर्वज्ञ श्रीराम करुणानिधे ॥
त्वन्मूर्तिदर्शनेनैव कृतार्थोऽहं च सर्वदा ॥ ७९ ॥

अर्थ–नारदजी बोले कि हे सर्वज्ञ ! हे दयाके समुद्र ! हे श्रीराम ! जो आप प्रसन्न हुए हो तो आपकी मूर्ति देखनेसे मैं सर्वप्रकार कृतार्थ होगया हूं ॥ ७९ ॥

धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं पुण्योऽहं पुरुषोत्तम ॥
अद्य मे सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे ॥८०॥

अर्थ–हे पुरुषोत्तम ! मैं धन्य हूं, कृतकृत्य हूं, पवित्र हूं, आज मेरा जन्म सफल हुआ और मेरा जीवन भी सफल हुआ है ॥ ८० ॥

अद्य मे सफलं ज्ञानमद्य मे सफलं तपः ॥
अद्य मे सफलं जन्म त्वत्पादाम्भोजदर्शनात् ॥८१॥

अर्थ—आपके चरणकमलके दर्शनसे आज मेरा ज्ञान सफल हुआ, आज मेरा तप सफल हुआ, आज मेरा जन्म सफल हुआ ॥ ८१ ॥

अद्य मे सफलं सर्वं त्वन्नामस्मरणं तथा ॥
त्वत्पादाम्भोरुहद्वन्द्वसद्भक्तिं देहि राघव ॥८२॥

अर्थ—आज मुझसे संबंध रखनेवाली समग्र वस्तु सफल हुई और आपके नामका स्मरण सफल हुआ, हे राघव ! आपके दोनों चरणकमलोंकी श्रेष्ठ भक्ति दीजिये ॥ ८२ ॥

ततः परमसंप्रीतो रामः प्राह स नारदम् ॥

अर्थ—फिर अत्यंत प्रसन्न हुए श्रीरामचंद्रजी नारदको कहते हुए ॥

श्रीराम उवाच ।

मुनिवर्य महाभाग मुने त्विष्टं ददामि ते ॥
यत्त्वया चेप्सितं सर्वं मनसा तद्भविष्यति ॥८३॥

अर्थ-श्रीरामचंद्रजी बोले, हे मुनिश्रेष्ठ ! हे महाभाग ! हे मुने ! तुझको वांछित देता हूं. तैंने जो मनसे इच्छा की वह सब होगा. ॥ ८३ ॥

नारद उवाच ।

वरं न याचे रघुनाथ युष्म-
त्पादाब्जभक्तिः सततं ममास्तु ॥
इदं प्रियं नाथ वरं प्रयाचे
पुनः पुनस्त्वामिदमेव याचे ॥ ८४ ॥

अर्थ-नारदजी बोले हे रामचंद्रजी ! मैं दूसरा कुछ वर नहीं मांगता हूं, मुझको आपके चरणकमलकी भक्ति निरंतर होवो. हे स्वामिन् ! यही प्रिय वर मांगताहूं वारंवार यही मांगता हूं अन्य नहीं ॥ ८४ ॥

व्यास उवाच

इत्येवमीडितो रामः प्रादात्तस्मै वरान्तरम् ॥
वीरो रामो महातेजाः सच्चिदानन्दविग्रहः ८५

अर्थ–व्यासजी बोले इसप्रकार स्तुति किये गये वीर महातेजस्वी सत् चित् आनंदस्वरूप श्रीरामजी नारदजीके लिये दूसरा वर देते भये. ॥ ८५ ॥

अद्वैतममलं ज्ञानं स्वनामस्मरणं तथा ॥
अन्तर्धाय जगन्नाथः पुरतस्तस्य राघवः॥८६॥

अर्थ–अद्वैत निर्मल ज्ञान और अपने नामका स्मरण देके जगत्के नाथ रामचंद्रजी नारदजीके देखते देखते अन्तर्धान होते हुए ॥ ८६ ॥

इति श्रीरघुनाथस्य स्तवराजमनुत्तमम् ॥
सर्वसौभाग्यसंपत्तिदायकं मुक्तिदं शुभम् ॥८७॥

अर्थ–इस प्रकार रघुनाथजीका अतिउत्तम रामस्तवराज समग्र सौभाग्य, संपत्तियोंका देनेवाला, मुक्तिको देनेवाला है और श्रेष्ठ है ॥ ८७ ॥

कथितं ब्रह्मपुत्रेण वेदानां सारमुत्तमम् ॥
गुह्याद्गुह्यतमं दिव्यं तव स्नेहात्प्रकीर्तितम्॥८८॥

अर्थ—व्यासजी कहते हैं कि नारदजीने उत्तम जो वेदोंका सार कहा सो हे धर्मराज ! तेरा स्नेह होनेके कारण गुप्तसे भी गुप्त मनोहर रामस्तवराज मैंने तुझे कहा है ॥ ८८ ॥

यः पठेच्छृणुयाद्वापि त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः॥
ब्रह्महत्यादिपापानि तत्समानि बहूनि च ॥८९॥

अर्थ—जो पुरुष तीनों कालोंमें श्रद्धासे पढे वा सुने तो उसके ब्रह्महत्या आदि पाप और उस (ब्रह्महत्या) जैसे और भी सब पाप नष्ट होजावें ॥ ८९ ॥

स्वर्णस्तेयसुरापानगुरुतल्पयुतानि च ॥
गोवधाद्युपपापानि ह्यनृतादिभवानि च ॥९०॥

अर्थ—सोनेकी चोरी करना, मदिरा पीना, गुरुकी स्त्रीसे संग करना ये और गोवधादिक उपपातक, झूट बोलनेसे हुए पाप ऐसे सब पाप रामस्तवराजका पाठ करनेसे नष्ट होते हैं ॥ ९० ॥

सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पायुतशतोद्भवैः ॥
मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम् ९१

अर्थ—बहुत कल्पोंसे हुए सब पापोंसे छूट जाता है, मन, वचन, कर्मसे संचित कियाहुआ पाप ॥ ९१ ॥

श्रीरामस्मरणेनैव तत्क्षणान्नश्यति ध्रुवम् ॥
इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेतदिहोच्यते ॥ ९२ ॥

अर्थ–निश्चयही श्रीरामजीके स्मरणमात्रसे सब पाप तत्क्षण छूट जाते हैं, यह सत्य है, यह सत्य है, यहाँ पर सब सत्य ही कहा है ॥ ९२ ॥

रामः सत्यं परं ब्रह्म रामात्किंचिन्न विद्यते ॥
तस्माद्रामस्वरूपत्वात् सत्यं सत्यमिदं जगत् ९३

अर्थ–श्रीराम सत्य परब्रह्म है, रामसे पृथक् कुछ भी नहीं है तिससे रामचंद्रजी ब्रह्मस्वरूप होनेसे यह सब जगत् सत्य है ॥ ९३ ॥

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य
राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश ॥

राजाधिराज रघुनन्दन रामभद्र
दासोऽहमद्य भवतां शरणागतोऽस्मि॥९४॥

अर्थ—हे रामचंद्र ! हे रघुश्रेष्ठ ! हे राजाओंमें श्रेष्ठ ! हे राजेन्द्र! हे राम! हे रघुनायक ! हे राघवेश! हे राजाओंके राजा ! हे रघुनंदन ! हे रामभद्र ! मैं दास हूं, आज आपके शरण आया हूं ॥ ९४ ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने संस्थितम्॥
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनीन्द्रैः परं
व्याख्यातं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ ९५ ॥

अर्थ—जानकीजीसहित कल्पवृक्षके नीचे सुवर्णके महामंडपके बीचमें मणिजडित पुष्पक आसनपर वीरासन लगाये स्थित है और जिस तत्त्वरूप रामका मुनींद्र लोगोंने व्याख्यान किया है वही तत्त्व हनुमान्‌जी आगे

वाचते हैं और भरत शत्रुघ्न लक्ष्मणसे घिरेहुए श्याम ऐसे रामको मैं भजता हूं ॥ ९५ ॥

रामं रत्नकिरीटकुण्डलयुतं केयूरहारान्वितं
सीतालंकृतवामभागममलं सिंहासनस्थं विभुम्॥
सुग्रीवादिहरीश्वरैः सुरगणैः संसेव्यमानं सदा
विश्वामित्रपराशरादिमुनिभिःसंस्तूयमानं प्रभुम्

अर्थ-रत्नोंके मुकुट, कुंडल, भुजबंद, हारसंयुक्त, सीताकरके शोभित वाम अंग है जिनका, निर्मल, सिंहासनपर स्थित, व्यापक, सुग्रीवादि वानरों करके और देवगणों करके सदा सेवित, विश्वामित्र पराशरादि मुनियोंसे स्तुति किये हुए प्रभुरामको दंडवत करता हूं ॥ ९६ ॥

सकलगुणनिधानं योगिभिः स्तूयमानं
भुजविजितसमानं राक्षसेन्द्रादिमानम् ॥
अहितनृपभयानं सीतया शोभमानं
स्मृतहृदयविमानं ब्रह्म रामाभिधानम् ९७

अर्थ–सवगुणोंके स्थान, योगियों करके स्तूयमान, भुज-वलसे गर्विष्ठ लोगोंको जीतनेवाले, रावणादिकोंको मारने-वाले, दुष्ट राजाओंको भय देनेवाले, सीताकरके शोभित, स्मरण किया है हृदयमें पुष्पक विमान जिन्होंने ऐसे रामनामवाले ब्रह्मको मैं ध्यान करता हूं ॥ ९७ ॥

रघुवर तव मूर्तिर्मामके मानसाब्जे
नरकगतिहरं ते नामधेयं मुखे मे ॥
अनिशमतुलभक्त्या मस्तकं त्वत्पदाब्जे
भवजलनिधिमग्नं रक्ष मामार्तबन्धो ॥९८॥

अर्थ–हे रघुवर ! आपकी मूर्ति मेरे हृदयकमलमें रहै, नरकगतिको हरनेवाला आपका नाम मेरे मुखमें रहै, निरन्तर अतुल भक्तिसे आपके चरणकमलोंमें मेरा शिर रहै. हे शरणागतके वंधु ! संसारसागरमें डूवते हुए मुझको उवारो ॥ ९८ ॥

रामरत्नमहं वन्दे चित्रकूटपतिं हरिम् ॥
कौसल्याभक्तिसंभूतं जानकीकण्ठभूषणम् ९९

इति श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदोक्तं श्री-
रामचन्द्रस्तवराजस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अर्थ–चित्रकूटके पति, पापोंके हरनेवाले, कौसल्याजीकी भक्तिसे अवतार लेनेवाले, जानकीजीके कंठके आभूषण, ऐसे रामरत्नको मैं नमस्कार करता हूं ॥ ९९ ॥

इति मरुदेशीयखेतवाडीग्रामनिवासिचीमन-
रामभट्टसूनुमादत्तशास्त्रिविरचितया
भाषाटीकया समलंकृतः सनत्कु-
मारसंहितान्तर्गतनारदोक्त-
श्रीरामस्तवराजः
समाप्तः ।

६२३

श्रीः ॥

रामस्तवराजः

भाषाटीकोपेतः ।

स च

गौडवंशीयहरिप्रसादात्मजेन व्रजवल्लभेन

रघुवंशशर्मशास्त्रिद्वारा संशोधयित्वा

मुंबय्यां

"निर्णयसागर" मुद्रायन्त्रालये मुद्रापयित्वा

प्रकाशितः ॥

शके १८३४, संवत् १९६९, सन १९१२.